इसलिए होगी कि सब सखियां एक-दूसरे के पैरों के नीचे से निकल सकती हैं, पर वालाजी नहीं निकल सकते, वहीं खड़े रह जाएंगे)

॥ प्रकरण ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ ४९८ ॥

राग कल्याण–चरचरी

आज राज पूरण काज, मन मनोरथ सुंदरी।
मन मनोरथ सुंदरी, सखी मन मनोरथ सुंदरी॥ १ ॥

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हे सखियो! आज वालाजी हमारी सब इच्छाएं पूर्ण करेंगे।

विध विधना विलास, मगन सकल साथ।
मरकलडे करे हांस, रेहेस रामत विस्तरी॥ २ ॥

तरह-तरह के आनन्द में सखियां मग्न हैं और मुस्कराकर हंसती हैं। तरह-तरह के खेल खेलती हैं।

कह्यो न जाय आनंद, अंग न माय उमंग।
विकसियां अमारा मन, रहियो सर्वे हरवरी॥ ३ ॥

इस समय के आनन्द का वर्णन नहीं हो सकता। अंग में उमंग समाती नहीं है। सबके मन प्रफुल्लित हैं और सब अत्यन्त तेजी से खेल रही हैं।

आ समेनो वृंदावन, जुओ रे आ सोभा चंद।
फूलडे अनेक रंग, रमे साथ परवरी॥ ४ ॥

इस समय वृन्दावन के चन्द्रमा की तथा अनेक रंग के फूलों की शोभा देखो। ऐसे में हमारे सुन्दरसाथ मग्न होकर खेल रहे हैं।

काबर कोयल स्वर, कपोत घूमे चकोर।
मृगला वांदर मोर, नाचत फेरी फरी॥ ५ ॥

मैना, कोयल के मीठे स्वर गूंज रहे हैं। कबूतर और चकोर घूम रहे हैं। हिरण, बन्दर, मोर घूम-घूमकर ऐसे सुन्दर दृश्य को देखकर नाच रहे हैं।

स्यामनां उलासी अंग, उलट अमारे संग।
मांहों–मांहें मकरंद, व्यापियो विविध पेरी॥ ६ ॥

श्री श्यामजी (श्री कृष्णजी) के अंग का उल्लास देखकर हमारे अंग में भी उमंग आती है और आपस में काम की लपट तरह-तरह से अंग में भरी है।

रामत करे कामनी, विलसतां वाधी जामनी।
सखी सखी प्रते स्याम घन, दिए सुख दया करी॥ ७ ॥

सखियां रामत करती हैं। रात भी इस आनन्द में स्थिर हो गई है। श्री श्यामजी (श्री कृष्णजी) भी एक-एक गोपी के पास बारी-बारी से जाकर सुख देते हैं।

रमतां दिए चुमन, एक रस जुवती जन।
करी जुगत नौतन, चितडा लीधा हरी॥ ८ ॥

खेलते-खेलते चुम्बन देती हैं। सब युवतियां एक रस में भीगी हैं। वालाजी ने नए-नए प्यार देकर उनके चित्त को मोह लिया है।

Nijanand App

कंठ बाहों वली वली, अनेक विधे रंग रली।
लिए अमृत मुख मेली, पिए रस भरी भरी।। ९ ।।

फेर-फेरकर गले में हाथ डालते हैं। अनेक प्रकार से मिलते हैं तथा मुख से मुख मिलाकर अमृत रस का पान करते हैं।

रस घणो उपजावती, सखी मीठड़े स्वर गावती।
नव नवा रंग ल्यावती, इंद्रावती अंग धरी धरी।। १० ।।

इस तरह से रामत में खूब आनन्द आ रहा है। सखियां मीठे स्वरों में गा रही हैं। श्री इन्द्रावतीजी अंग में नए-नए विचार लेकर खेल खिलाती हैं।

।। प्रकरण ।। १९ ।। चौपाई ।। ५०८ ।।

राग पंचम मारू

रामत गढ तणी रे, हाथ मांहें हाथ दीजे।
बल करीने सहु ग्रहजो बांहोंडी, तो ए रामत रस लीजे।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हाथ से हाथ पकड़ कर हम किले जैसा रूप बनाकर रामत खेलें। तुम सब ताकत से बांहों को पकड़ रखना तो रामत का आनन्द आएगा।

प्रथम पाधरू कहूं रे सखियो, ए रामत छे मदमाती।
दोडी न सके तेणी बांहोंड़ी न छूटे, ते आवसे पाछल घसलाती।। २ ।।

पहले मैं तुमको साफ-साफ समझा देती हूं कि यह खेल मस्ती से भरा है। जो नहीं दौड़ सकेगी उसका हाथ तो नहीं छूटेगा, पर गिरकर पीछे-पीछे घिसटती हुई आएगी।

ते माटे बंध बांहों खरो ग्रही, करजो जोरमां जोर।
पछे दोडसो त्यारे नहीं रे केहेवाय, थासे अति घणो सोर।। ३ ।।

इस वास्ते बांहों को मजबूती से पकड़ना और जोर से ताकत लगाना। यदि दौड़ में पीछे रह जाओगी तो बड़ी हंसी होगी।

पेहेली चाल चालो कीडीनी, हलवे पगलां भरजो।
पछे वली कांईक अधकेरां, वधतां वधतां वधजो।। ४ ।।

पहली चाल चींटी की तरह चलो। फिर धीरे-धीरे चाल बढ़ाओ। फिर चाल बढ़ाते-बढ़ाते खूब बढ़ाओ।

वली कांईक वृध पामतां, मचकासूं म हालजो।
हजी लगे आकला म थाजो, लडसडती चाल चालजो।। ५ ।।

और इससे भी अधिक बढ़ाने पर मस्ती में नहीं चलना। अभी से ही जल्दी नहीं करना। लटकती-मटकती चाल चलना।

हवे कांईक पग भरजो प्रगट, सावचेत सहु थाजो।
साथ सकल तमे आप संभाली, मुखडे पुकारीने गाजो।। ६ ।।

अब सब सावधान होकर धीरे-धीरे पग बढ़ाओ। फिर एक ही स्वर से गर्जना करके भागो।

Nijanand App